ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):442-447

आचार्य रजनीश के शैक्षिक दर्शन एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन

शैलेन्द्र कुमार सिंह एवं देवेन्द्र यादव

शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मा0 वि0)
प्रयागराज, (उ0प्र0)

Received: 04.08.2025 *Revised: 25.10.2025* *Accepted: 15.11.2025*

सारांश

शिक्षा दर्शन के विकासोन्मुखी ऐतिहासिक उन्नयन क्रम को यदि आरम्भ से देखते हुए वर्तमान की यात्रा की जाए तो इस सदी का सबसे अधिक चर्तित एवं तार्किक दृष्टिकोण वाला एक ऐसा दार्शनिक विचारक जिसके चिन्तन एवं विचार प्रकाण्ड बुद्धजीवियों को जहाँ एक ओर पुनः चिन्तन करने को बाध्य करते है, वहीं दूसरी ओर उनकी बातें एवं दर्शन सामान्य व्यक्तियों को बहुत ही रुचिपूर्ण एवं व्यवहारिक ढंग से समझ में आ जाती है। इसी संदर्भ में आचार्य रजनीश (ओशो) के दर्शन का प्रगतिशील एवं व्यवहारिक विचार जो कि दर्शन को विद्वानों की मानसिक सम्पदा की सीमा से बाहर लाकर जन सामान्य के लिए जीवनोपयोगी तत्व बनाने का प्रयास है।

आचार्य रजनीश बीसवीं सदीं के महान दार्शनिक थे। आचार्य रजनीश ने समकालीन परिवेश मं समसामयिक घटनाओं, समस्याओं के प्रति चाहे वह किसी भी क्षेत्र से सम्बधित हो एक नवीन दृष्टिकोण एवं तार्किक आधार पर विश्लेषण किया। इनका विश्लेषण किसी भय, पक्षपात या स्थापित मान्याताओं की परवाह से मुक्त होते थे, एक शल्यक (सर्जन) की तरह। उस समय आचार्य रजनीश की आलोचनाएं बहुत हुई। जो आज भी होती है लेकिन उनके विचारों का सम्यक मूल्यांकन नहीं हुआ रजनीश अपनी दार्शनिक विचारधारा में अतिवादिता के स्थान पर लचीलापन एवं समन्वयवादी विचारधारा, मध्यममार्ग के पोषक एवं समर्थक रहें। आचार्य रजनीश अपनी विचारधारा में मनुष्य को उस मार्ग पर ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहें जिससे वह भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह से विकसित एवं समृध हो सके।

प्रस्तावना

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में विस्तार जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन पर्यंत है। यह मात्र ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करने की प्रणाली नहीं है, बल्कि अर्जित ज्ञान को व्यहार में लाकर सर्वांगीण विकास की अवधारणा है। ज्ञान को मात्र सूचनाओ का सग्रंह बनाने की अपेक्षा इसमें व्यावहारिक प्रवाहशीलता, परिवर्तनीयता, नवीनता, लचीलापन आदि का गुण विकसित करना होगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाएं तो ज्ञान का संचय, उसका परिष्करण एवं हस्तांतरण यही आयाम ज्ञान की परम्परा को पुर्नजीवित करते तथा दीर्घायु बनाते है। किन्तु यदि यह वैज्ञानिक प्रक्रिया मात्र एक सैद्धान्तिक परम्परा की तरह चलती रही तो प्रत्येक समकालीन समाज में यह ज्ञान अपनी प्रासंगिकता एवं उपादेयता खोने लगता है। साथ ही साथ इसमें अनेक रूढियॉ एवं विसंगतिया आ जाती है। इसलिए ज्ञान एवं शिक्षा की परम्परा को अपने समकालीन समाज में प्रासंगिक एवं उपादेय होने के लिए अपने ज्ञान के स्रोत के दृष्टिकोण जिसे हम दर्शन कहते है, को तर्कशील, वैज्ञानिक, सर्वसुलभ, प्रगतिशील एंव व्यवहारिक बनाना होगा।

विगत कई दशकों से भारतीय दर्शन एवं विश्वजगत के अनेक दर्शन जिनका अध्ययन एवं अध्यापन मात्र उच्च शिक्षा केन्द्रों में उच्चस्तरीय शिक्षाप्राप्त विद्वानों एवं विद्यार्थियों तक ही सीमित रह गया है। इसके विपरीत जनसमान्य भौतिकता की प्रगति को ही विकास का वास्तविक स्वरूप मान चुका है, जबकि वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण (समस्त विश्व जीवजगत एवं जीवन के प्रति) ही उसके एवं उसके समाज के विकास व विनाश का आधार तय करती है। विकासक्रम विचारों (चिन्तन) से प्रारम्भ होता है, विकासकाल में विचार ही प्रगति देते है तथा विकसित अवस्था में सम्पूर्ण मूल्यांकन विचार चिन्तन से ही होता है। पुनः आगे की भविष्यगाथा भी विचार चिन्तन से ही तय होती है। संक्षेप में कहा जाये तो यही दर्शन की वैज्ञानिकता है।

आचार्य रजनीश के शिक्षा संबधी विचारो का अध्ययन

मनुष्य को सम्पूर्ण जीवजगत में समस्त प्राणीयों में विशिष्ट एवं समझदार प्राणी बनाने वाला आधारभूत तत्व शिक्षा ही है। इस मनुष्य को सामान्य प्राणी से एक सफल व्यक्तित्व तक की यात्रा पूरी करने में शिक्षा अपने सभी रूपों (प्रत्यक्ष, परोक्ष, औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक एवं आनुभविक) का अवलंबन देती है।

अपने आरम्भिक जीवनकाल से ही आचार्य रजनीश एक मेधावी एवं तीव्रबुद्धि विद्यार्थी थे। व्यावसायिक जीवन के आरंम्भ में भी आचार्य रजनीश दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक रहें इस प्रकार वह शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही गहराई तक समझ रखते थे। शिक्षक, शिक्षार्थी तथ शिक्षाप्रणाली में सदैव ही मूलभूत ढांचे में एक क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते थे वे कहते थे कि आर्थिक-औद्योगिक क्रांतियां हुई, राजनैतिक क्रांतियां हुई लेकिन शिक्षा में कोई बुनियादी क्रांति नहीं हुई। क्या यह

विचारणीय नहीं है कि क्या शिक्षा में किसी बुनियादी क्रांति के हुए बिना मनुष्य की संस्कृति में कोई परिवर्तन हो सकता है? इसके उत्तर में वे कहते है कि जिस दिन शिक्षा व्यक्ति कि अद्वितीय निजता के सत्य को समझ जायेगी उसी दिन शिक्षा में बुनियादी क्रांति का सूत्रपात हो जायेगा। तब किसी एक व्यक्ति के ढाचें में दूसरें व्यक्ति को नहीं मापा जायेगा या बनाया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी- अपनी प्रकृति के अनुरूप पूर्ण विकसित होने का अवसर पायेगा। उनका मानना है कि शिक्षा का कार्य प्रश्न का उत्तर देने के बजाय व्यक्ति को स्वयं उत्तर खोजने, समस्या का समाधान करने में सक्षम बनाना है आचार्य रजनीश कहते हैं शिक्षा का कार्य प्रश्न का उत्तर पा लेने से बेहतर स्यवं के भीतर विचार की शक्ति का जाग जाना है तब व्यक्ति जीवन की किसी भी समस्या का उत्तर ढूढने में स्वयं समर्थ हो जाता है। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के शाश्वत सत्य के खोज की उच्चतम यात्रा पर ले जा सके तो शिक्षा को उद्देश्य पूरा हो जाता है।

आचार्य रजनीश के अनुसार समाज अपने बच्चों के मस्तिष्क में पुरानी परम्परावादी विचारधाराएं डाल कर उनसें नवीन परिवर्तन एवं नये व्यक्तित्व की कल्पना करता है। यह पता ही नहीं लगता है कि कौन किसको धोखा दे रहा है। सभी धर्म, पंथ के लोग अपने-अपने धर्म की बातें बच्चों के मन ढूंस कर पहले से चली आ रही पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा को शिक्षा की आड़ लेकर आगे बढा रहे है तथा कल्पना नये समाज, विकसित समाज की कर रहे है। जबतक इस परम्परावादी पाखंडवादी, सड़ीगली विचारधारा से शिक्षा मुक्त नहीं होगी, लोगो का विचार मुक्त नहीं होगा तबतक वैचारिक रूप से सक्षम, आत्मनिर्भर नागरिक नहीं बनेगें। हमें बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी होगी जिससे वें किसी घटना, विषयवस्तु पर पुनः स्वविवेक से सोच विचारकर किसी निर्णय पर पहुच सकें।

अभिभावकों को इस प्रकार शिक्षित किया जाये कि वह बच्चों पर अपना विचार, मान्यताएं, परम्पाराएं थोपने के बजाय स्वतंत्रतापूर्वक, प्रेमपूर्वक सीखते हुए, गलती सुधारते हुए, गलत रास्ते से बचते हुए अपने ढ़ंग से सीखे। बच्चों में अभिभावक अपनी पूर्वनिर्धारित सोच को आरोपित करने से बचें।

वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर समाज में जो विषमताएं पाई जाती है उन्हीं के कारण समाज का अपेक्षित विकास बाधित होता है। किसी समाज के स्वभाविक विकास के लिए भावी पीढ़ी में स्वतंत्र चेतना का विकास आवश्यक है, उसे वर्ग, धर्म, जाति के स्तर से ऊपर उठकर मानवतावदी विचारधारा में विश्वास रखना होगा। अभिभावको को भी अपना पूर्वनिर्धारित विचारधारा बच्चों पर थोपने की बजाय उन्हें स्वभाविक प्रकृति को विकसित होने देना चाहिए।

समाज के स्वस्थ विकास के लिए स्त्री शिक्षा को भी पूरा एवं बराबर अवसर एवं सम्मान मिलना आवश्यक है। एक स्त्री के शिक्षित होने से पूरी पीढ़ी शिक्षित होती है। यह स्त्री ही परिवार का आधार होती है, तथा यही परिवार समाज का आधार बनता है। इसलिए यदि प्रत्यक्ष रूप से

स्त्री को शिक्षित किया जाये तो परोक्ष रूप से समाज भी शिक्षित हो जायेगां।

आचार्य रजनीश एक ऐसे दार्शनिक है, जो मात्र जीव और जड़ के प्रपंच में पड़े रहने के बजाय आधुनिक एवं परिवर्तनशील समय के मनुष्य की हर समस्या तक चिन्तन, समाधान, सुझाव का मार्ग प्रशस्त करते रहें हैं। उनका मानना है कि समाज की पुर्नस्थापना में शिक्षा अनिवार्य भूमिका निभाती है। आचार्य रजनीश की विचारधारा आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद के बीच व्यवहारवाद एवं मानवतावाद को स्पर्श करती है। शिक्षा एंव समाज के प्रति उनके विचार तार्किक, वैज्ञानिक, प्रगतिशील, आधुनिक एवं व्यहारिक है।

वैदिक काल से लेकर आजतक भारतीय दार्शनिकों ने वैयक्तिक तथा सामाजिक समस्याओं को लेकर ही चिन्तन प्रारम्भ किया तथा मानवीय जीवन को संतुलन प्रदान करने के लिए ही एक सुसंस्कृत संस्कृति का निर्माण किया जिसमें जीवन के आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यत्मिक, राजनैतिक, भौतिक आदि अनेक मानवीय मूल्यों पर सूक्ष्म दृष्टि डाली। यही चिन्तन मनुष्य का सम्बंध शिक्षा से जोड़ता है क्योंकि शैक्षिक दर्शन, दर्शन शास्त्र की अनुप्रयुक्त शाखा है शिक्षा ही वह शाधन है जहाँ दर्शन द्वारा निर्धारित जीवन के लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है, शिक्षा के उद्देश्य वे साधन है जिनके द्वारा जीवन के मूल्यों तक पहुचा जा सकता है।

परन्तु वर्तमान परिवेश में यह प्रश्न उठता है कि शिक्षा के द्वारा हम क्या पाना चाहते है? शिक्षा प्राप्त करने का वास्तविक पात्र कौन है? क्या शिक्षा मात्र ज्ञान प्राप्त करने का साधन है? या इससे अधिक कुछ और भी है? शिक्षा से किस प्रकार की क्षमताएं एवं योग्यताएं विकसित हो सकती है? शिक्षा व्यक्तियों में मानवीय मूल्यों का निर्माण किस प्रकार कर सकती है? आदि इस प्रकार के अनेको प्रश्न मानव मस्तिष्क में द्वन्द उत्पन्न करते रहते है, परन्तु जब युग बदलता है तब वस्तुतः नये युग का भी शुभारम्भ हो जाता है और व्यक्ति व समाज में आमूल-चूल परिवर्तन होने लगते है।

आज का वर्तमान परिपेक्ष्य आमूल-चूल परिवर्तन का ही दौर है। जिसके परिणामस्वरूप हमारा जीवन मानसिक दबावों व तनावों में उलझ गया है। जिसके कारण मनुष्य विषाद, अवसाद, क्लेश, ईर्ष्या, व्यथा आदि से पीड़ित है। अतः जब परस्पर विरोधी आवेग हमारे सभी प्रयासो को गतिहीन व अक्षम कर दें तथा मनुष्य स्वयं को अनिर्णय एवं असमंजस की स्थिती में पाये तो उस स्थिती में अनेक प्रकार के प्रश्न स्वतः ही खड़े हो जाते है जैसे एक समान्य, संतुलित जीवन कैसे जिया जाएं? कैसे अपनी मानसिक स्थिती को स्वस्थ एवं संतुलित रखा जाएं? शोक, पीड़ा, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक उन्माद, अत्याचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, मानसिक विकृतियाँ, भेदभाव आदि से कैसे निजात मिल सकेगा? हम कैसे निश्चित करे कि वर्तमान समय में हमारे कर्तव्य क्या है, हमारे मानवीय मूल्य क्या है?

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

यह सर्वविदित सत्य है कि जब भी कोई कालखण्ड समस्याओं से घिरा रहता है तो उसका उद्धार करने का एकमात्र साधन शिक्षा में क्रांतिकरी परिवर्तन के रूप में उपलब्ध होना है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा कि प्रक्रिया ही मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा को एक ऐसी दृष्टि चाहिए जो विज्ञान, दर्शन, शिक्षा, मानवीय मूल्य के शैक्षिक वातावरण को एक सामंजस्यपूर्ण आधार देने में सक्षम हो सके। वर्तमान समय में मूल्यों को उपदेश के रूप में ग्रहण करना उपयुक्त नहीं माना जाता है, बल्कि विद्यार्थियों को मूल्यों का विश्लेषण करना, उनका स्पष्टीकरण करना तथा उन पर शोध व तर्कपूर्ण चिन्तन करना आना चाहिए। भारतीय समाज की समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और शिक्षा सम्बधी मानवीय मूल्यों के संदर्भ को जानना व समझना आवश्यक है।

आधुनिक समय में विकास की दौड़ में सभी देश दस्तक दे रहें है, सही व स्थाई विकास के मानदण्ड पर स्वयं को खरा साबित करने के लिए मानवीय मूल्यों की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देना होगा। इसी क्रम में मानवीय मूल्य की शिक्षा के निम्नाकिंत आधार रखने होगें।

- सामाजिक विकास
- शिक्षा संदर्भित विकास
- सांस्कृतिक विकास
- राजनैतिक विकास
- आर्थिक विकास
- नैतिक विकास
- आध्यात्मिक विकास
- पर्यावरण

अतः मानवीय मूल्य शिक्षा को वर्तमान परिवेश में किस रूप से विकसित किया जाए? इस संदर्भ में आचार्य रजनीश ने कहा है किः-

“जिस दिन भी शिक्षा विद्रोही होगी, उसी दिन एक बिल्कुल ही नयी मनुष्ता का जन्म हो सकता है। विद्रोह से अर्थ है- मूल्यों में क्रान्ति”

निश्चित ही जीवन मूल्य गलत है अन्यथा मनुष्य के जीवन में यह अशान्ति, यह अर्थहीनता, यह कुरूपता, यह हिंसा, यह ईर्ष्या, यह अधर्म नहीं होता।

आज के युग को मूल्यों के घोर संकट से उबारने में यही दृष्टिकोण संजीवनी का कार्य कर

सकता है। जिसमें जीवन के प्रत्येक धुरी को जैसे- स्त्री-पुरुष, पाप-पुण्य, आस्तिक-नास्तिक, भौतिक-आध्यात्मिक, जीवन-मृत्यु, भोग-योग, गृहस्थ-सन्यास, समाज-व्यक्ति, शरीर व आत्मा तथा पूरब-पश्चिम आदि से सम्बन्धित मूल्यों के प्रति मानवीय दृष्टि रखते हुए समग्रता के साथ स्वीकारा जाए।

संदर्भ ग्रंथ

1. ओशो (1996), शिक्षा में क्रांति, रेवल पब्लिकेशन हाउस प्रा0 लि0, पुणे।
2. ओशो (1997), नये भारत की खोज, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
3. ओशो (1998), भारतः एक अनूठी सम्पदा, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
4. ओशो टाइम्स, इण्टरनेशनल (मासिक पत्रिका) मार्च 1996, प्रकाशक ताओ पब्लिशिंग प्रा0 लि0, पुणे।
5. शर्मा, आर. ए. (2010) तत्व मीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्य समीमांसा एवं शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
6. क्रांतिबीज, (2004) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 पुणे।
7. जीवन रहस्य (2002) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 पुणे।
8. ध्यान सूत्र एंव अपूर्व अभियान (2002) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 पुणे।
9. ध्यान क्या है (2012), डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
10. नये समाज की खोज (2004), रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 पुणे।

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.